

उनि ॥ अनिवार्य तद्विषयं ॥ वक्रकसितददंति ॥ इति न जनीयासहर्तं च ॥
विद्यामकीनमाभिदं ॥ उथं ॥ अगनका वाह सासं नृगयाय ॥ देवस्वाय ॥
अनवादि संपदी वागनां किं वय १ कं रुट् ॥ स्वांन ॥ अं अनवादिय स्वाहा ॥ य
गा ॥ उनि ॥ ॥ उं निव वधूं म हावी व ॥ ख मै पा भ कट जनी ॥ सर्व इष्टु नि वा व न ॥ अ
व वि व न मा मि दं ॥ १ ॥ उथं ॥ नं अ न्य साय ॥ गु नू नि ग या य ॥ देव स्वाय ॥ उं न
अत्यसं प वि वा वा नां किं वय १ कं रुट् ॥ सा वा य ॥ अं न कि वा र्य स्वाहा ॥ य गा ॥ अं
ना रि ज न ॥ नि व धूं ॥ नि र क ॥ को ध वि ग दं ॥ व ज दं द्रा क न ज नि ॥ न कि वा ज न मा

मि दं ॥ उथं वा य य स ॥ गु नू नी ल या य ॥ देव स्वाय ॥ ॥ उं वा यि वा संप दी वा वा
किं वय १ कं रुट् ॥ स्वा न वा य वा ॥ अं म हा व व स्वा हा ॥ य गा ॥ उनि ॥ ॥ अं क धूं
व धूं म हा को धं ॥ व गा क न दं लु नी ॥ न ज नि वा स द स र्त्तं च ॥ नि व द लु न मा मि दं ॥ ६ ॥ उ
ह द्रान स ॥ द धू स वा वा व ॥ नृ ग या य ॥ देव स्वा हो य ॥ ॥ उं वु क्रा दि संप दी वा वा
किं व १ कं रुट् ॥ स्वा न वा य ॥ म हा व वा य स्वा हा ॥ य गा ॥ उनि ॥ ॥ उं नं मा व क्रा
जा व का र्म गु च क्रा रि ॥ न ज नि वा स द स र्त्तं च ॥ म हा व व न मा मि दं ॥ ७ ॥ उथं अ
ह द्रान स ॥ गु नू नृ या य ॥ देव स्वाय ॥ ॥ उं ना ग न मा संप वि वा वा नां किं व

मानव सर्ववत्ता संपूर्ण दिव्या वंका नरविर्ग सावना यत्र जिह्वा यत्र जस्रव्य
द्विजिग मृही लो नु मय्य मधुलं कर्म साधय उँ हिरिहिरिहिरि हिरि हिरि हिरि हिरि
धनमुपयाय न नदवी साखि लनासि सर्ववृक्षी नूनायिना वर्या नय विअध
नू लमिपावमिगासूत्र जथा मानव वंदन र्ग साखि सिंद वनायिना नथा मानव वंद
जिह्वा मील लं लयया मिदं धनवर्ग धाय उँ भदनी वजिर तव वन वं न्ध हं
पं वयुता नयु जा ना राखा यथा वादन तुजि वरी विय उँ वरुक्ष व सर्व डावी उ
दय रु व न नु ववी गृह्ण श्रव श्रवा हि उँ धन धी धान धाय साखा

[illegible]

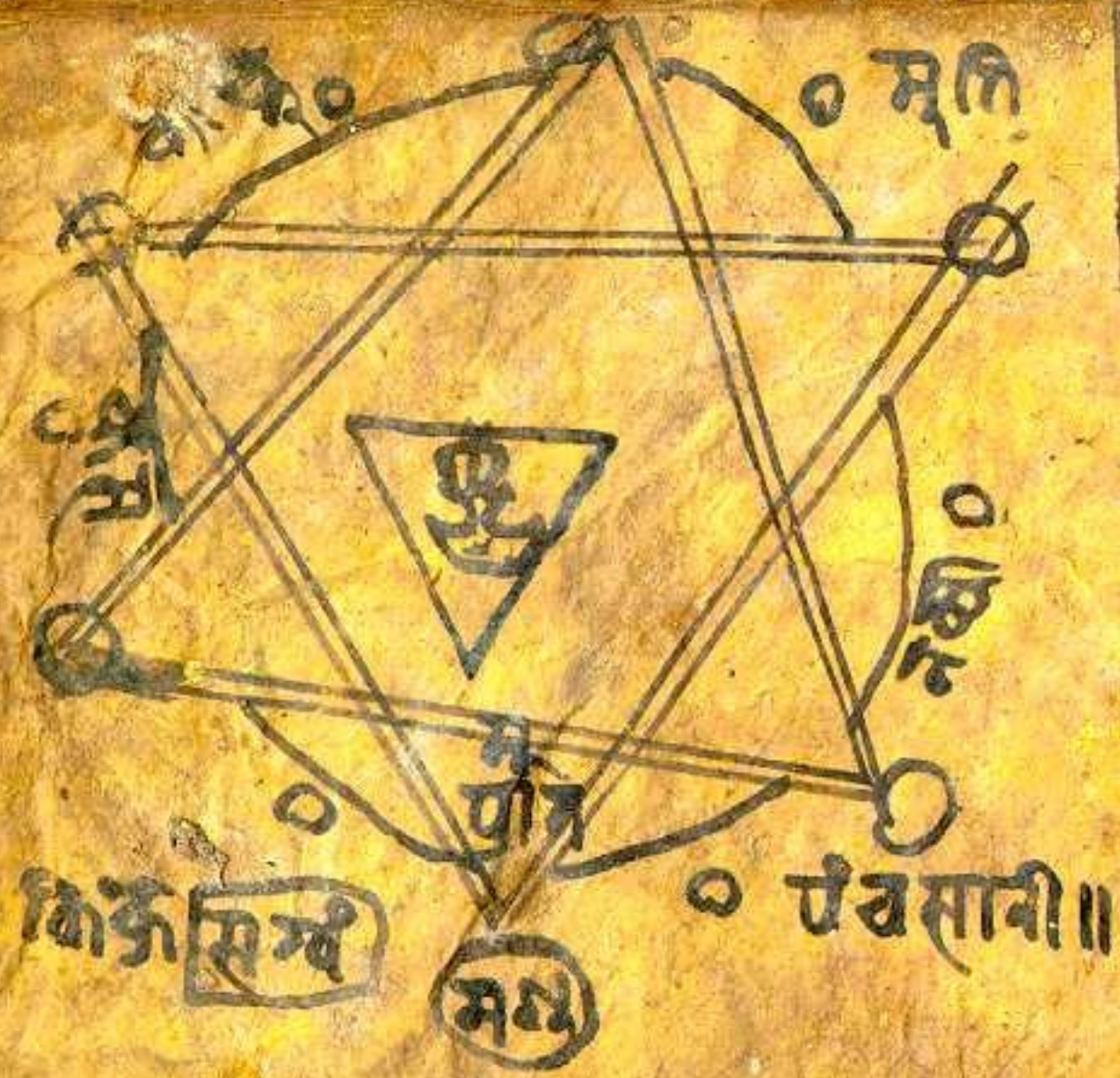
सुखाधिवारुन वरुनधिय ॥ ॐ हं ग्रां ह्रीं अः स्वस्वमं कुन स्वस्वदव ना विचिन्ति ॐ
वज्रसमयसूरुं मा तिकुं म्य हं हं ॥ ॐ तिसुखाधिवारुन ॥ थपात्री व वज्राधिवारुन ॥
॥ ॐ का वरुं यं व सुविक भितवज्र विताये ॥ ॐ वज्रसुविक ॥ ॐ तिवज्र धिवारुन ॥
थपात्री वरुं व धिवारुन याय ॥ यं का वरुं भितवज्र ॥ भं ख धव व वरुं वासुकि ना
ग वरुं विताये ॥ ॐ श्री भं ख पात्र नाग वरुं नमस्वाहा ॥ ॐ तिमं व धिवारुन विधि ॥
थपात्री वरुं थ धिवारुन याय ॥ ॐ ऊ का वरुं यं न विताये ॥ ॐ वज्रकर्म वरुं यं युग्म
अस्वाहा ॥ ॐ तिमं थ धिवारुन विधि ॥ ॥ तमा वं ग धिवारुन याय ॥ नी वरुं ग वज्र

नधिसीत ॥ ॥ ॐ हं वज्राधिवारुन समय हं ॥ ॥ भायु व ॥ ॐ वं वज्राधिवारुन समय हं ॥
नुयु वं ग स ॥ ॐ आ ॥ वज्र विरु समय हं ॥ आदु लं ग ॥ ॐ की वज्र विरु समय हं ॥ ॥
वादु व ग ॥ ॐ वं वज्र विरु समय हं ॥ पंचय व वरुं ग ॥ वास्या ॥ लुति ॥ ॐ तिवग धिवारुन
न विधि ॥ थपात्री वरुं मं व लया व थस ॥ यं वं सुग थप ना या दा व ॥ ध्यान ॥ ॐ मं व ल व
म थप व वारुन सुख स मा वा यं ॥ वकु भ वरुं ॥ उरु व सा ध वं ॥ व लु भ राय वरुं विताये ॥ ॥ थ
न ल मा प न या दा व ॥ गु व व ॥ सा दा व ॥ ॐ भ न स ॥ नं पु र व स वा दा व ॥ सु ग ह व ॥ ॥
॥ सु न्ना न्ना न्ना न्ना न्ना स व व मा ना ॥ ॐ व व स वा न्ना न्ना स व व मा ना ॥ अन्य न्ना न्ना न्ना स

[illegible]

॥ अष्टमयुकाः धर्षिगुनीनः पद्मिपूरुषाद्विधाः ॥ ॥ वृद्धावृद्धिज्ञानसा विवावीक ॥
 ॥ नखः स्वानेदाहावाः सावीतीवः विद्यावीगः वज्रवादि कीयास्तुय ॥ ॥ सा सिध्य ॥
 ॥ वृद्धयाः स्नानयावसः क्षयः ॥ विवागक्षयः पापः ॥ धर्षिगुनीः वज्रकायानः स्यावम ॥
 ॥ कुरुवाः ॥ सार्वमदः असार्वमदः धर्षिगुनीः विद्यावयाद्विष्ठाकः धर्षिः क्रयवम ॥
 ॥ श्वरीः वज्रवादिः श्वरीः प्रदगनवागा ॥ ॥ श्वरीवः फिकवसवीयः श्वरीवः श्वरीवः ॥
 ॥ यादानः उपहायाः जाययावकः ॥ ॥ असद्विवन्धदाकिनीवज्रवाः वज्रवेवावशीयहृदु ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



किं कुरु

मय

ॐ पंचसानी ॥

ॐ

ॐ मूल

ॐ पंच

ॐ

ॐ



ॐ मूल

ॐ पंच

ॐ मूल

मूल

मंडल

कोटि

संय

॥ मूडाननियकरव ॥ उँ मूडातर्वन्तु पत्रमडगर्न ॥ ॥ तासिक ॥ थ मूडापत्रम ॥
॥ मय, मयमयगी, पदसनमायमइ, मूडाधियमइ ॥ ॥ तगवन्त, तगवन्ति ॥
॥ दवी, मरुकावन्त, सर्वरूपायन्तनरुन ॥ ॥ तासिक ॥ थ थीगुनीम ॥
॥ डाव्सासीनयापानाधन, गिरकाव, द्वियथा, सिकपथा, सर्वरूपायन्तना ॥
॥ पुत्रवासी शनसायना ॥ थन मूडाननियकर ॥

[illegible]

शदि कायदाथया ॥ ददयानरव ॥ ॥ हासिक वाय ॥ ॥ उंरगवर्क
 महाकाग ॥ रगवतिमहादवी ॥ सवचकपववर्क ॥ ॥ हासिक ॥ श्रीरग
 व ॥ रगवतिदवीया ॥ पुदाथन ॥ थजिमिर्क ॥ सान ॥ थकनूकव ॥ यनमरु
 न ॥ यदाथरुन ॥ वायधूनायर्क ॥ रसा ॥ सिकन ॥ रसा ॥ भाव ॥ ॥ गुन
 ॥ ॥ यदरुन ॥ ॥ हासिक ॥ थकनूकवरुन ॥ नियरुका ॥
 रान ॥ वायधूनायर्क ॥ रसा ॥ सिकन ॥ ॥ नाययाने ॥ ॥ प्रागुरु ॥

[illegible]

न गियार्क वृथान रुमग पा पं रु न न श व काटियाप इवान
स इहायममाव अमग दरव आ सनाशय धममाव वं पमति
मूर्ख यदासीन मणिमाग च दारव इवसूरव परसीन नुम
न सूपुष्ट मरुली व ॥ हासिक थथि गुवृथा दिक्काय रिनि
ना काया एव नाथन धय धन समग पापनास रुव इव डावि
इ कर्षव नाव काम स आव काम स वा रु इव रुवन रु

यव हं पृष्ठा मंगव रुवा रुग स्वास रुव ॥ उं अयम सुरु
व रुम अयम सुरु वीरिव अयम पाय य धन अयम धन
धनिवी अयम मृगु नासाय अयम सुरु व रुम नायक ॥
हासिक थथी गुवी घाय रुम मरु रुय रुका रुन धन संपा
राणा व ॥ निवर रुय रु ससमोय ॥ पुन ॥